لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ

बेहूदा बात सुनें और न झुटलाना[28] सिला तुम्हारे रब की त़रफ़ से[29] निहायत काफ़ी अ़त़ा वोह जो रब है आस्मानों का

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है रह़मान कि उस से बात करने का इख़्तियार न रखेंगे[30] जिस दिन

يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ

जिब्रील खड़ा होगा और सब फ़िरिश्ते परा बांधे (सफ़ें बनाए) कोई न बोल सकेगा[31] मगर जिसे रह़मान ने इ़ज़्न दिया[32] और

قَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

उस ने ठीक बात कही[33] वोह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह बना ले[34]

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَ

हम तुम्हें[35] एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया[36] जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उस के हाथों ने आगे भेजा[37] और

يَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ ع ٢

काफ़िर कहेगा हाए मैं किसी त़रह़ ख़ाक हो जाता[38]

اٰیاتها ٤٦ | سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ ٨١ ٧٩ | رکوعاتها ٢

सूरए नाज़िआ़त मक्किय्या है, इस में छियालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

**28 :** या'नी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी न वहां कोई किसी को झुटलाएगा। **29 :** तुम्हारे आ'माल का **30 :** ब सबब उस के ख़ौफ़ के। **31 :** उस के रो'ब व जलाल से **32 :** कलाम या शफ़ाअ़त का **33 :** दुन्या में और उसी के मुत़ाबिक़ अ़मल किया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" मुराद है। **34 :** अ़मले सालेह़ कर के ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहे। **35 :** ऐ काफ़िरो ! **36 :** मुराद इस से अ़ज़ाबे आख़िरत है। **37 :** या'नी हर नेकी बदी उस के नामए आ'माल में दर्ज होगी जिस को वोह रोज़े क़ियामत देखेगा। **38 :** ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहता। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा, अगर सींग वाले ने बे सींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिलाया जाएगा, इस के बा'द वोह सब ख़ाक कर दिये जाएंगे। येह देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना बयान किये हैं कि मोमिनीन पर अल्लाह तआ़ला के इन्आ़म देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वोह दुन्या में ख़ाक होता या'नी मुतवाज़ेअ़ होता, मुतकब्बिर व सरकश न होता। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि काफ़िर से मुराद इब्लीस है जिस ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام पर त़ा'ना किया था कि वोह मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर इफ़्तिख़ार किया था, जब वोह ह़ज़रते आदम और उन की ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आप को शिद्दते अ़ज़ाब में मुब्तला पाएगा तो कहेगा काश मैं मिट्टी होता या'नी ह़ज़रते आदम की त़रह़ मिट्टी से पैदा किया हुवा होता। **1 :** सूरए النّٰزِعٰت मक्किय्या है, इस में दो रुकूअ़, छियालीस आयतें, एक सो सत्तानवे कलिमे, सात सो तिरपन ह़र्फ़ हैं।



www.dawateislami.net

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴿۱﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾

क़सम उन की[2] कि सख़्ती से जान खींचें[3] और नरमी से बन्द खोलें[4] और आसानी से पेरें (चलें)[5]

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿۵﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾ وقف لازم

फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुंचें[6] फिर काम की तदबीर करें[7] कि काफ़िरों पर ज़रूर अ़ज़ाब होगा जिस दिन थरथराएगी थरथराने वाली[8]

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾ وقف لازم

उस के पीछे आएगी पीछे आने वाली[9] कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे आंख ऊपर न उठा सकेंगे[10]

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾

काफ़िर[11] कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाउं पलटेंगे[12] क्या जब गली हड्डियां हो जाएंगे[13]

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۲﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ فَاِذَا هُمْ وقف لازم

बोले यूं तो येह पलटना निरा नुक़्सान है[14] तो वोह[15] नहीं मगर एक झिड़की[16] जभी वोह खुले मैदान

بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۴﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ﴿۱۵﴾ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ وقف لازم

में आ पड़े होंगे[17] क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई[18] जब उसे उस के रब ने पाक जंगल

الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ﴿۱۶﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۚ﴿۱۷﴾ فَقُلْ هَلْ لَّكَ

तुवा में[19] निदा फ़रमाई कि फ़िरऔ़न के पास जा उस ने सर उठाया[20] उस से कह क्या तुझे रग़बत

اِلٰۤى اَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿۱۸﴾ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۚ﴿۱۹﴾ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ

इस त़रफ़ है कि सुथरा हो[21] और तुझे तेरे रब की त़रफ़[22] राह बताऊं कि तू डरे[23] फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी

2 : या'नी उन फ़िरिश्तों की 3 : काफ़िरों की 4 : या'नी मोमिनीन की जानें नरमी के साथ क़ब्ज़ करें। 5 : जिस्म के अन्दर या आस्मान व ज़मीन के दरमियान मोमिनीन की रूहें ले कर। كَمَارُوِىَ عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه। 6 : अपनी ख़िदमत पर, जिस के मामूर हैं। (روح البیان) 7 : या'नी उमूरे दुन्यविय्या के इन्तिज़ाम जो उन से मुतअ़ल्लिक़ हैं उन के सर अन्जाम करें। येह क़सम इस पर है 8 : ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़ नफ़्ख़ए ऊला से इज़्तिराब में आ जाएगी और तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी। 9 : या'नी नफ़्ख़ए सानिया होगा जिस से हर शै बि इज़्ने इलाही ज़िन्दा कर दी जाएगी, इन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़ासिला होगा। 10 : उस दिन के होल और दहशत से, येह ह़ाल कुफ़्फ़ार का होगा। 11 : जो मरने के बा'द उठने के मुन्किर हैं जब उन से कहा जाता है कि तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे तो 12 : या'नी मौत के बा'द फिर ज़िन्दगी की त़रफ़ वापस किये जाएंगे। 13 : रेज़ा रेज़ा बिखरी हुई, फिर भी ज़िन्दा किये जाएंगे ? 14 : या'नी अगर मौत के बा'द ज़िन्दा किया जाना सह़ीह़ है और हम मरने के बा'द उठाए गए तो इस में हमारा बड़ा नुक़्सान है क्यूं कि हम दुन्या में इस की तक्ज़ीब करते रहे, येह मक़ूला उन का बत़रीक़े इस्तिहज़ा था, इस पर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को येह न समझो कि अल्लाह तआ़ला के लिये कुछ दुश्वार है, क्यूं कि क़ादिरे बरह़क़ पर कुछ भी दुश्वार नहीं। 15 : नफ़्ख़ए अख़ीरा। 16 : जिस से सब जम्अ़ कर लिये जाएंगे और जब नफ़्ख़ए अख़ीरा होगा 17 : ज़िन्दा हो कर। 18 : येह ख़ित़ाब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जब क़ौम का तक्ज़ीब करना आप को शाक़ और ना गवार गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने आप की तस्कीन के लिये ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया जिन्हों ने अपनी क़ौम से बहुत तक्लीफ़ें पाई थीं, मुराद येह है कि अम्बिया को येह बातें पेश आती रहती हैं, आप इस से ग़मगीन न हों। 19 : जो मुल्के



www.dawateislami.net

الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾

दिखाई[24] इस पर उस ने झुटलाया[25] और ना फ़रमानी की फिर पीठ दी[26] अपनी कोशिश में लगा[27] तो लोगों को जम्अ़ किया[28] फिर पुकारा

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

फिर बोला मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं[29] तो अल्लाह ने उसे दुन्या व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा[30]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٢٦﴾ ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ع ٢٦/٣

बेशक इस में सीख (सबक़) मिलता है उसे जो डरे[31] क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना[32] मुश्किल या आस्मान का

بَنٰىهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَ

अल्लाह ने उसे बनाया उस की छत ऊंची की[33] फिर उसे ठीक किया[34] उस की रात अंधेरी की और उस की रोशनी चमकाई[35] और

الْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَ

इस के बा'द ज़मीन फैलाई[36] उस में से[37] उस का पानी और चारा निकाला[38] और

الْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

पहाड़ों को जमाया[39] तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाएदे को फिर जब आएगी वोह आ़म मुसीबत

الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ

सब से बड़ी[40] उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी[41] और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की

يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ

जाएगी[42] तो वोह जिस ने सरकशी की[43] और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी[44] तो बेशक जहन्नम ही उस का

الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾

ठिकाना है और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा[45] और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका[46]

शाम में तूर के क़रीब है। **20 :** और वोह कुफ़्र व फ़साद में हद से गुज़र गया **21 :** कुफ़्रो शिर्क और मा'सियत व ना फ़रमानी से **22 :** या'नी उस की ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त की तरफ़ **23 :** उस के अ़ज़ाब से **24 :** यदे बैज़ा और अ़सा **25 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को **26 :** या'नी ईमान से ए'राज़ किया। **27 :** फ़साद अंगेज़ी की **28 :** या'नी जादूगरों को और अपने लश्करों को **29 :** या'नी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं। **30 :** दुन्या में ग़र्क़ किया और आख़िरत में दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा। **31 :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से। इस के बा'द मुन्किरीने बअ़्स को इताब फ़रमाया जाता है। **32 :** तुम्हारे मरने के बा'द **33 :** बिग़ैर सुतून के **34 :** ऐसा कि उस में कहीं कोई ख़लल नहीं **35 :** नूरे आफ़्ताब को ज़ाहिर फ़रमा कर **36 :** जो पैदा तो आस्मान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी। **37 :** चश्मे जारी फ़रमा कर **38 :** जिसे जानदार खाते हैं। **39 :** रूए ज़मीन पर ताकि उस को सुकून हो **40 :** या'नी नफ़्ख़ए सानिया होगा जिस में मुर्दे उठाए जाएंगे। **41 :** दुन्या में नेक या बद **42 :** और तमाम ख़ल्क़ इस को देखेगी। **43 :** हद से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया **44 :** आख़िरत पर और शहवात का ताबेअ़ हुवा **45 :** और इस ने जाना कि इसे रोज़े क़ियामत अपने रब के हुज़ूर हिसाब के लिये हाज़िर होना है **46 :** हराम चीज़ों की।



www.dawateislami.net

فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰىؕ (٤١) یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ مُرْسٰىهَاؕ (٤٢)

तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है[47] तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब के लिये ठहरी हुई है

فِیْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَاؕ (٤٣) اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَاؕ (٤٤) اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ

तुम्हें उस के बयान से क्या तअ़ल्लुक़[48] तुम्हारे रब ही तक उस की इन्तिहा है तुम तो फ़क़त् उसे डराने वाले हो

ع ٢ ٢٠ ٢ مَنْ یَّخْشٰىهَاؕ (٤٥) كَاَنَّهُمْ یَوْمَ یَرَوْنَهَا لَمْ یَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِیَّةً اَوْ ضُحٰىهَا۠ (٤٦)

जो उस से डरे गोया जिस दिन वोह उसे देखेंगे[49] दुन्या में न रहे थे मगर एक शाम या उस के दिन चढ़े

اٰیاتها ٤٢ | ٨٠ سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّیَّةٌ ٢٤ | رکوعها ١

सूरए अ़बस मक्किय्या है, इस में बियालीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤىۙ (١) اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰىؕ (٢) وَ مَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّهٗ یَزَّكّٰۤىۙ (٣)

तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा[2] इस पर कि उस के पास वोह नाबीना ह़ाज़िर हुवा[3] और तुम्हें क्या मा'लूम शायद वोह सुथरा हो[4]

اَوْ یَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰىؕ (٤) اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰىۙ (٥) فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰىؕ (٦)

या नसीह़त ले तो उसे नसीह़त फ़ाएदा दे वोह जो बे परवाह बनता है[5] तुम उस के तो पीछे पड़ते हो[6]

وَ مَا عَلَیْكَ اَلَّا یَزَّكّٰىؕ (٧) وَ اَمَّا مَنْ جَآءَكَ یَسْعٰىۙ (٨) وَ هُوَ یَخْشٰىۙ (٩)

और तुम्हारा कुछ ज़ियां नहीं इस में कि वोह सुथरा न हो[7] और वोह जो तुम्हारे हुज़ूर मलक्ता (नाज़ से दौड़ता हुवा) आया[8] और वोह डर रहा है[9]

**47 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मक्का के काफ़िर **48 :** और उस का वक़्त बताने से क्या ग़रज़ **49 :** या'नी काफ़िर क़ियामत को जिस का इन्कार करते हैं तो उस के होल व दहशत से अपनी ज़िन्दगानी की मुद्दत भूल जाएंगे और ख़याल करेंगे कि **1 :** "सूरए अ़बस" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बियालीस आयतें, एक सो तीस कलिमे, पांच सो तेंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने **3 :** या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उ़त्बा बिन रबीआ़, अबू जह्ल बिन हिशाम और अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब और उबय बिन ख़लफ़ और उमय्या बिन ख़लफ़ अशराफ़े क़ुरैश को इस्लाम की दा'वत फ़रमा रहे थे, इस दरमियान में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नाबीना ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बार बार निदा कर के अ़र्ज़ किया कि जो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को सिखाया है मुझे ता'लीम फ़रमाइये ! इब्ने उम्मे मक्तूम ने येह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं, इस से क़त्ए कलाम होगा। येह बात हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को गिरां गुज़री और आसारे ना गवारी चेहरए अक़्दस पर नुमायां हुए और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अपनी दौलत सराए अक़्दस की त़रफ़ वापस हुए। इस पर येह आयात नाज़िल हुईं। और "नाबीना" फ़रमाने में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की मा'ज़ूरी की त़रफ़ इशारा है कि क़त्ए कलाम उन से इस वज्ह से वाक़ेअ़ हुवा। इस आयत के नुज़ूल के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम का इक्राम फ़रमाते थे। **4 :** गुनाहों से। आप का इर्शाद सुन कर **5 : अल्लाह** तआ़ला से और ईमान लाने से ब सबब अपने माल के **6 :** और उस के ईमान लाने की त़मअ़ में उस के दरपै होते हो। **7 :** ईमान ला कर और हिदायत पा कर, क्यूं कि आप के ज़िम्मे दा'वत देना और पयामे इलाही पहुंचा देना है। **8 :** या'नी इब्ने उम्मे मक्तूम **9 : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से।



www.dawateislami.net